

मुकदमों का विवरण

सच्चिदानंदम की मृत्यु उनके एल. आर. एस. के माध्यम से हुई।

ई. वनजा और ओआरएस।

(2018 की सिविल अपील संख्या 3667) नवंबर 06, 2023

[बी. आर. गवई, हिमा कोहली और प्रशांत कुमार मिश्रा, जे. जे.] हेडनोट्स

विचार के लिए विषय: चाहे हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम, 1956 के प्रावधानों के अंतर्गत, पूर्व-मृत बेटे की विधवा को अपनी सास के हिस्से में कोई भी हिस्सा प्राप्त करने का पहला अधिकार या हक है।

हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम, **1956-ss.15 (1)(क)** और **16**-महिला हिंदुओं के मामले में उत्तराधिकार के नियम-उत्तराधिकार का आदेश और महिला हिंदू के उत्तराधिकारियों के बीच वितरण का तरीका-पूर्व-मृत बेटे की विधवा को अपनी सास के हिस्से में कोई भी हिस्सा प्राप्त करने का पहला अधिकार:

आयोजित किया गया: एस का एक संयुक्त पठन। 15(1)(ए) और एस। 16 इससे यह स्पष्ट हो जाएगा कि निर्वसीयत मर रही हिंदू महिला की संपत्ति सबसे पहले बेटों और बेटियों (किसी पूर्व-मृत बेटे या बेटे के बच्चों सहित) और पति को हस्तांतरित की जाएगी-इस प्रकार, पूर्व-मृत बेटे की विधवा होने के नाते वादी को अपनी सास के हिस्से में कोई हिस्सा प्राप्त करने का पहला अधिकार या हक नहीं है-उच्च न्यायालय द्वारा दर्ज किए गए आदेशों में कोई विकृति नहीं है कि सभी वाद संपत्तियां संयुक्त पारिवारिक संपत्तियां हैं-हालांकि, उच्च न्यायालय वाद संपत्तियों में अपनी सास के हिस्से में से वादी को 1/16 वां हिस्सा आवंटित करने में सही नहीं आक्षेपित [पैरा 13, 10, 14]

अन्य मामलों के विवरणों में आयातित आदेश और आवेदन आक्षेपित हैं

सिविल अपीलीय अधिकारिता 2018 की सिविल अपील No.3667।

240

241

सच्चिदानंदम की मृत्यु उनके एल. आर. एस. के माध्यम से हुई। ई. वनजा 242

2009 के एस. ए. No.76 में मद्रास में उच्च न्यायालय के निर्णय और आदेश दिनांक 28.02.2014 से।

सह

रूप:

बालाजी श्रीनिवासन, शिव कृष्णमूर्ति, सुश्री मोनिशा हांडा, राजुल श्रीवास्तव, के. कृष्ण कुमार, अधिवक्ता। उपस्थित पक्षकारों के लिए।

सर्वोच्च निर्णय के निर्णय का निर्णय/आदेश

प्रशांत कुमार मिश्रा, जे।

विशेष अनुमति याचिका (सी) डायरी संख्या (ओं) में देरी को माफ कर दिया गया। 7823 2018 से।

2. विशेष अनुमति याचिका (सी) संख्या (ओं) में दी गई छुट्टी। _____ @ विशेष अनुमति याचिका (सी) डायरी संख्या (ओं)। 7823 2018 से।

3. यह अपील प्रतिवादी नं. 2 (सच्चिदानंदम) उच्च न्यायालय द्वारा पारित निर्णय और डिक्री की वैधता और वैधता पर जोर देते हुए, वादी (ई. वनजा-प्रतिवादी सं. 1 यहाँ)।

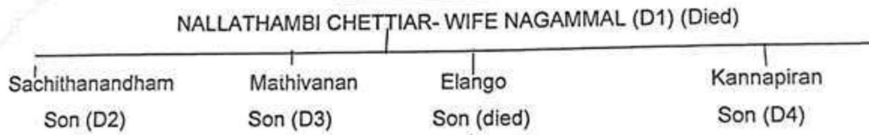
4. विभाजन के लिए वादी के मुकदमे को निचली न्यायालय ने मुकदमे की संपत्तियों में उसका आठवां हिस्सा आवंटित करने की अनुज्ञात थी। प्रतिवादी नं. द्वारा अपील पर। 2, प्रथम अपीलीय न्यायालय ने आंशिक रूप से यह अभिनिर्धारित करते हुए अपील की अनुज्ञात कि वादी/प्रतिवादी नं. 1 सूट 'बी' और 'सी1' अनुसूची संपत्तियों में 1/16 वें हिस्से का हकदार है। उसी समय, प्रथम अपीलीय न्यायालय ने वादी को सी. पी. सी. के आदेश 20 नियम 12 के अंतर्गत एक अलग कार्यवाही के माध्यम से 'सी1' अनुसूची संपत्ति और 'बी' अनुसूची संपत्तियों में मद 25 से 30 के संबंध में अपने उपचार पर काम करने की स्वतंत्रता प्रदान की। इसके विपरीत, उच्च न्यायालय ने दूसरी अपील में कहा है कि वादी के पति, अर्थात् इलनगोवन और उसकी सास की मृत्यु के बाद, वादी 'बी', 'सी' और 'सी1' अनुसूची संपत्तियों में अपनी सास के हिस्से के 1/8 वें और 1/16 वें हिस्से का हकदार है।

/

[2023] 14 एस सी आर।

5. वादी-प्रतिवादी नं. 1 नाल्लाथांबी चेट्टियार के तीसरे पुत्र एलंगो की विधवा और एकमात्र उत्तराधिकारी है, जबकि प्रतिवादी उक्त नाल्लाथांबी चेट्टियार की विधवा, बेटे और बेटियां और पोते हैं। पक्षकारों के बीच संबंधों की सराहना करने के लिए वाद की अनुसूची 'ए' में उल्लिखित वंशावली वृक्ष का उल्लेख करना उचित होगा।

SCHEDULE 'A'
GENEOLOGICAL TREE



6. वादी ने अनुसूची 'बी', 'सी' और 'सी1' में वर्णित वाद संपत्तियों के साथ-साथ व्यक्तिगत लाभों के लिए भी विभाजन के लिए एक मुकदमा दायर किया, जिसमें एक तिहाई 8 वें हिस्से या ऐसे शेयरों का दावा किया गया, जो न्यायालय समझता है। यह वादी का मामला था कि 'बी' अनुसूची संपत्तियां नल्लथांबी चेट्टियार की स्व-अर्जित संपत्तियां हैं, जबकि 'सी' अनुसूची संपत्तियों को प्रतिवादी एन. ओ. एस. द्वारा खरीदा गया है। 'बी' अनुसूची संपत्तियों और 'सी1' अनुसूची संपत्तियों से अर्जित आय से 1 से 4 तक भी संयुक्त पारिवारिक संपत्तियां हैं, इसलिए, वादी सभी संपत्तियों में 1/8 वें हिस्से का हकदार है।

7. प्रतिवादियों ने दोनों पक्षों के बीच संबंधों को स्वीकार किया। उनके अनुसार, वादी संयुक्त पारिवारिक संपत्तियों में अपने मृत पति के हिस्से के संबंध में हिस्सेदारी का दावा कर सकती है। यह कहा गया था कि वादी के पति की मृत्यु की तारीख को, नल्लथांबी चेट्टियार की संपत्ति में उनका आठवां हिस्सा उनकी पत्नी, वादी और उनकी मां (एलंगोवन की मां) को समान रूप से हस्तांतरित किया गया था, जिनकी मुकदमे के लंबित रहने के दौरान मृत्यु हो गई थी। इस प्रकार, वादी केवल 'बी' अनुसूची संपत्तियों में 1/16 वें हिस्से का हकदार है। 'सी' अनुसूची संपत्तियों के संबंध में, यह प्रतिवादियों का मामला था कि 243

सच्चिदानंदम की मृत्यु उनके एल. आर. एस. के माध्यम से हुई। ई. वनजा [प्रशांत कुमार मिश्रा, जे.] 244

वादी के मृत पति के नाम पर आईटम्स 15 और 16 को छोड़कर, अन्य संपत्तियाँ संयुक्त परिवार से संबंधित नहीं हैं। संयुक्त परिवार की संपत्तियों से आय के किसी भी हिस्से का उपयोग प्रतिवादी एन. ओ. एस. के व्यक्तिगत नामों पर संपत्तियों की खरीद के लिए नहीं किया गया है। 2 से 4 और 8। 8. दोनों पक्षों ने निचली न्यायालय के समक्ष मौखिक और दस्तावेजी साक्ष्य का नेतृत्व किया है, जिसके आधार पर निचली न्यायालय ने कहा कि प्रतिवादियों ने मृतक-1 वें प्रतिवादी (नागम्मल) द्वारा निष्पादित वसीयत की सत्यता स्थापित नहीं की है, इसलिए वे वसीयत में उल्लिखित संपत्तियों के संबंध में अधिकारों का दावा करने के हकदार नहीं हैं। विचारण न्यायालय ने स्पष्ट रूप से अभिनिर्धारित किया कि अनुसूची 'बी' और 'सी' में उल्लिखित संपत्तियां संयुक्त रूप से पारिवारिक संपत्तियां हैं और वादी उसमें 1/8 वीं की सीमा तक अपने हिस्से का हकदार है। प्रथम अपीलीय न्यायालय ने अभिनिर्धारित किया कि वादी/प्रत्यर्थी वाद 'बी' और 'सी1' अनुसूची संपत्तियों में 1/16 वें हिस्से का हकदार है। 'सी' अनुसूची संपत्तियों के संबंध में, प्रथम अपीलीय न्यायालय द्वारा यह अभिनिर्धारित किया गया था कि वे संयुक्त पारिवारिक संपत्तियां नहीं हैं और इस प्रकार, विभाजन के लिए

उत्तरदायी नहीं हैं। 9. दूसरी अपील की सुनवाई उच्च न्यायालय द्वारा कानून के निम्नलिखित महत्वपूर्ण प्रश्नों पर की गई थी:-

“(क) डी. डब्ल्यू. 1 के इस स्वीकार को ध्यान में रखते हुए कि संपत्तियों को संयुक्त परिवार की आय से खरीदा गया था, क्या निचली अपीलीय न्यायालय ने निचली न्यायालय की डिक्री और निर्णय को संशोधित करने में गलती की है?

(ख) जब पूर्व के अंतर्गत वसीयत। बी12 को विधि के अनुसार साबित नहीं किया गया था, क्या Ex.B12 की सच्चाई के संबंध में निचली अपीलीय न्यायालय का निर्णय विधि में मान्य है?

(ग) क्या डी1 से डी4 और डी8 के नाम पर खड़ी संपत्तियों की वस्तुओं के संबंध में वादी के नेतृत्व में मुकदमा खारिज करना टिकाऊ है? ”

अभिलेख पर उपलब्ध साक्ष्य के आधार पर, उच्च न्यायालय ने पाया कि संयुक्त परिवार की संपत्तियां और व्यवसाय दोनों पक्षों के संयुक्त कब्जे में बने हुए हैं और इसलिए, संयुक्त परिवार की स्थिति, पिछड़े और अग्रवर्ती दोनों को न्यायालय द्वारा ध्यान में रखा जाना चाहिए। उच्च न्यायालय ने अंततः अभिनिर्धारित किया कि सभी वाद अनुसूची संपत्तियां संयुक्त पारिवारिक संपत्तियां हैं।

/

[2023] 14 एस सी आर।

10. निचली अदालतों द्वारा दिए गए अभिवचनों, साक्ष्यों और निर्णयों की जांच करने के बाद, हम उच्च न्यायालय द्वारा दर्ज किए गए निर्णयों में किसी भी तरह की विकृति का अनुमान नहीं लगाते हैं, जिसमें कहा गया है कि सभी वाद संपत्तियां संयुक्त पारिवारिक संपत्तियां हैं। हालाँकि, हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम, 1956 की धारा 15 (1) (ए) और 16 में निहित प्रावधानों को देखते हुए, उच्च न्यायालय 'बी', 'सी' और 'सी1' अनुसूची संपत्तियों में अपनी सास के हिस्से में से वादी को 1/16 वां हिस्सा आवंटित करने में सही नहीं है।

11. अधिनियम की धारा 15 और 16 को संदर्भित करने की आवश्यकता है जो इसके तहत फिर से प्रस्तुत की गई हैं:

“15. महिला हिंदुओं के मामले में उत्तराधिकार के सामान्य नियम।- (1) द.

निर्वसीयत मरती हुई हिंदू महिला की संपत्ति धारा 16 में निर्धारित नियमों के अनुसार हस्तांतरित होगी -

(क) सबसे पहले पुत्रों और पुत्रियों (किसी पूर्व-मृत पुत्र या पुत्री के बच्चों सहित) और पति पर;

(ख) दूसरा, पति के उत्तराधिकारियों पर; (ग) तीसरा, माता और पिता पर;

((घ) चौथा, पिता के उत्तराधिकारियों पर; और (ङ) अंत में, माता के उत्तराधिकारियों पर।

(2) उप-धारा (1) में किसी बात के होते हुए भी, -

(क) किसी हिन्दू स्त्री को उसके पिता या माता से विरासत में मिली कोई संपत्ति, मृतक के किसी पुत्र या बेटी (किसी पूर्व-मृत पुत्र या बेटी के बच्चों सहित) की अनुपस्थिति में, उसमें निर्दिष्ट आदेश में उप-धारा (1) में निर्दिष्ट अन्य उत्तराधिकारियों को नहीं, बल्कि पिता के उत्तराधिकारियों को हस्तांतरित की जाएगी; और

(ख) किसी हिंदू महिला को उसके पति या उसके ससुर से विरासत में मिली कोई संपत्ति, मृतक के किसी बेटे या बेटी (किसी पूर्व-मृत बेटे या बेटी के बच्चों सहित) की अनुपस्थिति में, उसमें निर्दिष्ट आदेश में उप-धारा (1) में निर्दिष्ट अन्य उत्तराधिकारियों को नहीं, बल्कि पति के उत्तराधिकारियों को हस्तांतरित की जाएगी।

1 (संक्षेप में, 'द एक्ट')

245

सच्चिदानंदम की मृत्यु उनके एल. आर. एस. के माध्यम से हुई। ई. वनजा [प्रशांत कुमार मिश्रा, जे.] 246

16. उत्तराधिकार का क्रम और उत्तराधिकारियों के बीच वितरण का तरीका

एक हिंदू महिला।—धारा 15 में निर्दिष्ट उत्तराधिकारियों के बीच उत्तराधिकार का क्रम होगा, और उन उत्तराधिकारियों के बीच निर्वसीयत संपत्ति का वितरण निम्नलिखित नियमों के अनुसार होगा, अर्थात्:—

नियम 1.—धारा 15 की उप-धारा (1) में विनिर्दिष्ट उत्तराधिकारियों में, एक प्रविष्टि में उन लोगों को वरीयता दी जाएगी जो किसी भी उत्तरवर्ती प्रविष्टि में हैं और जो उसी प्रविष्टि में शामिल हैं वे एक साथ लेंगे। नियम 2.—यदि निर्वसीयत के किसी बेटे या बेटी ने निर्वसीयत की मृत्यु के समय अपने बच्चों को जीवित छोड़कर निर्वसीयत को पहले ही मृत कर दिया था, तो ऐसे बेटे या बेटी के बच्चे अपने बीच वह हिस्सा लेंगे जो ऐसे बेटे या बेटी ने निर्वसीयत की मृत्यु के समय लिया होगा।

नियम 3.—धारा 15 की उप-धारा (1) के खंड (ख), (घ) और (ङ) में निर्दिष्ट उत्तराधिकारियों को निर्वसीयत की संपत्ति का हस्तांतरण उसी क्रम में और उन्हीं नियमों के अनुसार होगा जो लागू होते यदि संपत्ति पिता या माता या पति की होती और ऐसे व्यक्ति की निर्वसीयत की मृत्यु के तुरंत बाद उसके संबंध में निर्वसीयत मृत्यु हो जाती। "

12. अधिनियम की धारा 15 और 16 में प्रावधान किया गया है कि निर्वसीयत महिला हिंदू की संपत्ति धारा 16 में निर्धारित नियमों के अनुसार हस्तांतरित की जाएगी। धारा 15 (1) (ए) में प्रावधान है कि ऐसा हस्तांतरण सबसे पहले बेटों और बेटियों (किसी पूर्व-मृत बेटे या बेटी के बच्चों सहित) और पति पर होगा। एक महिला हिंदू की निर्वसीयत संपत्ति के वितरण और

उत्तराधिकार के आदेश के लिए नियम अधिनियम की धारा 16 के अंतर्गत प्रदान किया गया है, जिसके अनुसार, धारा 15 में निर्दिष्ट एक महिला हिंदू के उत्तराधिकारियों के बीच उत्तराधिकार का आदेश, नियम 1 के अनुसार, अधिनियम की धारा 15 की उप-धारा (1) में निर्दिष्ट उत्तराधिकारियों के बीच होगा। 13. अधिनियम की धारा 15 (1) (ए) और धारा 16 को संयुक्त रूप से पढ़ने से यह स्पष्ट हो जाएगा कि निर्वसीयत महिला हिंदू की संपत्ति सबसे पहले बेटे और बेटियों (किसी पूर्व-मृत बेटे या बेटे के बच्चों सहित) और पति को हस्तांतरित की जाएगी। इसलिए, पूर्व-मृत पुत्र की विधवा होने के कारण वादी को अपनी सास के हिस्से में कोई हिस्सा प्राप्त करने का पहला अधिकार या हक नहीं है।

/

[2023] 14 एस सी आर।

14. पूर्वगामी कारणों से, हम 2018 की सिविल अपील संख्या 3667 को आंशिक रूप से अनुमति देते हैं। उच्च न्यायालय द्वारा दिया गया आक्षेपित निर्णय केवल इस हद तक संशोधित होगा कि वादी-प्रतिवादी नं। 1 मुकदमे की संपत्तियों में अपनी सास के हिस्से में 1/16 वें हिस्से का हकदार नहीं है। इस प्रकार, उच्च न्यायालय द्वारा पारित निर्णय और डिक्री उपरोक्त संशोधन के अधीन है।

15. परिणामस्वरूप, एसएलपी (सी) डायरी संख्या (ओं) से उत्पन्न नागरिक अपील 17823 वादी के नेतृत्व में 2018 की एफ. आई. का उपरोक्त शर्तों में निपटारा किया जाता है।

16. पक्षकार अपना खर्च स्वयं वहन करेंगे।

द्वारा तैयार किए गए हेडनोट:

अपीलों का निपटारा किया गया।

निधि जैन